पद्य पुस्तक

काव्य गुल्शन

द्वितीय सेमिस्टर

बी.बी.ए./बी.एच.एम/एम.टी.ए

B.B.A/B.H.M/M.T.A

II SEMESTER

चयन आधारित क्रेडिट पद्धति

–संपादक–

डॉ. सबिहा तस्नीम

डॉ. शोभा. एल.

प्रकाशक :

प्रसारांग

बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय

बेंगलूरू–560 001

KAVYA GULSHAN edited by Dr. Sabiha Tasneem and Dr. Shobha L.
Published by Registrar, Bengaluru Central University, Bengaluru - 560001.

Pp :

बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय
प्रथम संस्करण – 2019

प्रधान संपादक :
डॉ. शेखर

मूल्य :

प्रकाशक :
कुलसचिव :
बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय,
बेंगलुरु–560 001.

भूमिका

बेंगलूरू विश्वविध्यालय 2014–15 शैक्षणिक वर्ष से सेमिस्टर पद्धति में सी.बी.सी.एस. स्कीम स्नातक वर्ग के लिए चलाया जा रहा है, किन्तु बेंगलूरू विश्वविध्यालय के त्रिभाजन के फलस्वरूप "बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय" की ओर से आगामी 2019–2020,2020–2021 तथा 2021–2022 शैक्षणिक वर्षों के लिए नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण भी उपर्युक्त आधार पर ही स्नातक वर्ग हेतु किया गया है।

इस पृष्टभूमि में हिन्दी–अध्ययन–मण्डली हिन्दी ने विभागाध्यक्ष डॉ.शेखर जी के मार्गदर्शन में पाठ्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

संपादक – मण्डली का विश्वास है कि यह पद्य–संकलन छात्र–समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इस पठ्य–पुस्तक के निर्माण में योग देनेवाले सभी के प्रति विश्वविध्यालय आभारी है।

इस संकलन को अल्प समय में सुन्दर रूप से छापने वाले कुलसचिव,बेंगलूरू केन्द्र विश्वविद्यालय () मुद्रणालय के कर्मचारियों के प्रति भी हम आभारी हैं।

प्रो. जाफट.एस
कुलपति
बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय
बेंगलूरू

प्रकाशक की बात

बेंगलूरू केन्द्रीय विश्वविध्यालया ने स्नातक पुस्तक के लिए सेमिस्टर पद्धति (सी.बी.सी.एस) लागू किया है, उसके अनुसार हिन्दी–अध्ययन–मण्डलि ने अपने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर के मार्गदर्शन में पद्य–पुस्तक का निर्माण किया है।

पद्य– पुस्तक को समय पर तैयार करने में डॉ. सबिहा तस्नीम और डॉ. शोभा, एल जी ने बडा सहयोग दिया है। उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

विश्वविध्यालय की ओर से पद्य–पुस्तक को प्रकाशित कराने में उपकुलपति प्रो. जाफट. एस जी ने अत्यन्त उत्साह दिखाया है। एतदर्थ मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। इस पुस्तक को सुन्दर रूप से छापने वाले मुद्रणालय के कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

संयोजक

प्रसारांग

बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय

अध्यक्ष की बात

बेंगलूरू केन्द्र विश्वविध्यालय शैक्षणिक क्षेत्र में नये–नयेविषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को आज के संदर्भ के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयत्न हो रहा है । साहित्यिक विषयों को आज की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार रूपित करने के उद्देश्य से पाठ्य–क्रम को प्रस्तुत किया गया है ।

सेमिस्टर पद्धति (सी.बि.सी.एस.) के अनुकूल स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। इस पाठ्य–पुस्तक के निर्माण में योग देनेवाले संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ ।

इन नये पाठ्य–पुस्तकों के निर्माण में कुलपति महोदय प्रो. जाफट. एस जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, एतदर्थ मैं इनके प्रति कृतज्ञ हूँ ।

पुस्तक के कुलसचिव,बेंगलूरू केन्द्र विश्वविद्यालय मुद्रणालय के कर्मचारियों के प्रति भी हम आभारी हैं ।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
बेंगलूरू विश्वविध्यालय

संपादक की कलम से.....

साहित्य किसी समाज को समझने–परखने और अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम होता है। इसलिए साहित्य और समाज के विविध सरोकारों पर चर्चाएं होती रहती हैं और भिन्न–भिन्न कसौटीयों पर इसके मूल्याकंन भी होते रहते हैं। प्रत्येक रचनाकार के पास एक बिम्ब होता है, जिसमें वह जीता है और लगातार अपने युग विशेष की परिस्थितियों से संघर्षरत रहता है, उनसे प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित भी करता है।

हिन्दी साहित्य का आरंभ करने वाले सिद्ध और नाथ पंथी योगी समस्त भारत में घूम्–घूम कर अपने काव्यों के माध्यम से आठवीं शताब्दी से बारह्वीं शताब्दी तक राष्ट्र की एकता का प्रचार करते रहे। इन्हीं सिद्ध और नाथ पंथियों के प्रयास से उस भाषा का विकास हुआ, जिसे कालान्तर में या आज हिन्दी कहा जाता है।

वीर गाथा काल से लेकर आधुनिक काल की खडी बोली तक कई कवियों ने हिन्दी पद्य साहित्य को संमृद्ध किया हैं। लेकिन भूमंडलीकरण, निजीकरण, व्यावसायिकता और बाजारवाद के इस युग में साहित्य की प्रासंगिकता लुप्त न हो जाये, इसलिए युवापीढी के उस वर्ग के समक्ष साहित्यिक विचार रखने का प्रयास किया गया है, जो बदलते हुए परिवेश से अधिक प्रभावित है। युवापीढी मे एक सतही मानसिकता पनप रही है, जिसके कारण सार्थक जीवन मूल्यों से उनके भटकने की संभावना बढ गयी है। इस संदर्भ में यह अत्यावश्यक है कि उनमें अपने देश, समाज और साहित्य के प्रति जिम्मेदारी निभाने की सोच विकसित हो।

इस उद्देश्य से प्रस्तुत काव्य संग्रह काव्य गुल्शन में ऐसी कुछ कविताओं का चयन किया गया है, जो वाणिज्य के विद्यार्थियों को व्यापार की दुनिया में प्रगतिशील होने के साथ– साथ भारतीय समाज, साहित्य और संस्कृति से भीजोडे रख सके।

प्रस्तुत संकलन में जिन कवियों की कवितायें संग्रहित है, उनके प्रति हम आभारी हैं । आशा करते है कि प्रस्तुत पुस्तक "काव्य–गुल्शन" विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकार की भावना के साथ–साथ उन में मानवीय मूल्यों को भी प्रबल करने में सक्षम होगी।

डॉ. सबिहा तस्नीम
डॉ. शोभा. एल.

अनुक्रमणिका

1. बिहारी लाल–दोहे पृ.सं

2. रसखान – सवैये

3. मैथिलीशरण गुप्त – निर्झर

4. महादेवी वर्मा – कह दे माँ क्या अब देखूँ

5. रामधारी सिंह दिनकर – जनतंत्र का जन्म

6. डॉ. राम निवास मानव – बंदर की व्यथा

7. दिविक रमेश – महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में टहलते हुए

8. अनामिका – बेजगह

9. गोरख् पाण्डे – बन्द खिडकियों से टकराकर

बिहारी के दोहे

1. कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ।
   उडी जाति कितहुँ, तऊ उडायक हाथ ॥

2. कब को टेरत दीन ह्वै, होत न स्याम सहाय।
   तुम हूँ लागी जगत– गुरु, जगनायक जग बाय॥

3. सम्पत्ति केस सुदेस नर, नमत दुहुन इक बानि।
   विभव सतर कुच नीच नर, नरम विभव की हानि॥

4. जात–जात वित होय है, ज्यों जिय में संतोष।
   होत–होत त्यों होय तौ, हो धरी में मोष॥

5. भजन कह्यौ जासों भज्यौ न एकौ बार।
   दूर भजन जासौ कह्यौ, सो तू भज्यौ गँवार ॥

6. बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमान।
   भलो भलो कहि छोडिये, खोटे ग्रह जप दान॥

7. थोरे ई गुन रीझते, बिसराई वह बानि।
   तुम हू कान्ह मनो भये, आज कालि के दानि॥

रसखान सवैये

1. जो रसखान रस ना विलसै तेविं बेहु सदा निज नाम उचारै।
मो कर नीकि करैं करनी जु पै कुंज कुटीरन देहु बुहारना।
सिद्धि समृद्धि सबै रसखानि लहौ ब्रज–रेनुका अंग सवरन।
खास निवास मिले जु पै तो वही कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन॥

2. सुनिए सब की कहिए न कछू, रहिए इमि या भव–सागर में।
करिए ब्रत, नेम, सचाईलिये, जिनते तरिए भव–सागर में।
मिलिए सब सों दुरभाव बिना, रहिए सतसंग उजागर में ।
'रसखानि' गुविन्दहि यों भजिए, जिमि नागरि को चित गागर में॥

3. गुंज गरे सिर मोर पखा, अरू चाल गयंद की मो मन भावै।
सावरो नंद्कुमार सबै, ब्रजमंडली में ब्रजराज कहावै॥
साज समाज सबै सिरताज, औ छाज का बात नहीं कहि आवै।
ताहि अहीर की छोकरियां, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ॥

4. वेही ब्रह्म ब्रह्मा जाहि सेवत हैं रैन दिन,
सदासिव सदा ही धरत ध्यान गाढे है।
वेई विष्णु जाके काज मानि मूढ राजा रंक,
जोगी जती व्हैके सीत सह्यौ अंग डाढे हैं।
वेई ब्रजचन्द रसखानि प्रान प्रानन के,
जाके अभिलाख लाख लाख भाँति बाढे हैं।
जसुदा के आगे वसुधा के मान मोचन थे,
तामरस–लोचन खरोचन को ठाढे हैं॥

मैथिलीशरण गुप्त

निर्झर

शत शत बाधा बन्धन तोड.;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।
प्लावित कर पृथ्वी के गर्त्त,
समतल कर बहु गह्वर गर्त्त,
दिखलाकर आवर्त्त–विवर्त्त,
आता हूँ आलोड–विलोड.;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।
पारावार मिलन की चाह,
मुझे मार्ग की क्या परवाह,
मेरा पथ है स्वतः प्रवाह,
जाता हूँ चिरजीवन जोड.;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।

गढकर अनगढ उपल अनेक,
उन्हें बनाकर शिव सविवेक,
करके फिर उनका अभिषेक,
बढता हूँ निज नवगति मोड.;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।
हरियाली है मेरे संग,
मेरे कण कण में सौ रंग,

फिर भी देख जगत के ढंग,
मुडता हूँ मैं भृकुटि मरोड. ;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।
धर कर नव कलरव निष्पाप,
हर कर संतप्तों का ताप,
अपना मार्ग बनाकर आप,
जाऊँ सब कुछ पीछे छोड. ;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।
है सबका स्वागत–सम्मान,
करे यहाँ कोई रस–पान,
मेरा जीवन गतिमय गान,
काल! तुझी से मेरी होड;
निकल चला मैं पत्थर फोड.।

('स्वस्ति और संकेत' से)

महादेवी वर्मा

कह दे माँ क्या अब देखूँ !

कह दे माँ क्या अब देखूँ !
देखूँ खिलती कलियाँ या
प्यासे सूखे अधरों को ,
तेरी चिर यौवन – सुषमा
या जर्जर जीवन देखूँ !

देखूँ हिम – हीरक हँसते
हिलते नीले कमलों पर,
या मुरझायी पलकों से
झरते आँसू – कण देखूँ !

सौरभ पी पी कर बहता
देखूँ यह मन्द समीरण,
दुख की घूँटें पीती या
ठण्डी साँसों को देखूँ !

बहलाऊँ नव किसलय के–
झूले में अलि – शिशु तेरे,
पाषाणों में मसले या
फूलों से शैशव देखूँ!

तेरे असीम आँगन का
देखूँ जगमग दीवाली,
या इस निर्जन कोने के

बुझते दीपक को देखूँ!
देखूँ विहगों का कलरव
घुलता जल की कलकल में,
निस्पन्द पडी वीणा से
या बिखरे मानस देखूँ!
मृदु रजत– रश्मियाँ देखूँ
उलझी निद्रा – पंखों में ,
या निर्निमेष पलकों में
चिन्ता का अभिनय देखूँ !
तुझ में अम्लान हँसी है
इसमें अजस्र आँसू – जल,
तेरा वैभव देखूँ या
जीवन का क्रन्दन देखूँ !
('सन्धिनी' से)

रामधारी सिंह दिनकर

(1)

जनतन्त्र का जन्म

सदियों की ठंडी–बुझी राख सुगबुगा उठी,
मि–ी सोने का ताज पहन इठलाती है;
दो राह,समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

जनता? हाँ, मिट्टी की अबोध मूरत वहीं,
जाडे–पाले की कसम सदा सहने वाली,
जब अंग–अंग में लतेसाँप हो चूस रहे
तब भी न कभी मुंह खोल दर्द कहने वाली।

जनता? हाँलंबी–बडी जीभ की वही कसम,
"जनता, सचमुच ही, बडी वेदना सहती है।"
"सो ठीक, मगर, आखिर, इनमें जनमत क्या है?"
"है प्रश्न गूढ जनता इस पर क्या कहती है?"

मानो,जनता ही फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दूधमुंही जिसे बहलाने के
जन्तर–मन्तर सीमित हों चार खिलौनों में

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते है,

जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड जाती
सांसों के बल से ताज हवा में उडता है,
जनता की रोके राह, समय में ताव कहां?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुडता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अंधकार
बीता; गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं,
यह और नहीं कोई, जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमडते जाते हैं।

सब से विराट जनतंत्र जगत का आ पहुंचा,
तैंतीस कोटि –हित सिंहासन तय्यार करो
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिये तू किसे ढूंढता है मूरख,
मन्दिरों, राजप्रसादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सडकों पर मि–ी तोड रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

फावडे और हल राजदण्ड बनने को हैं,

धूसरता सोने से श्रृंगार सजाती है;
दो राह, समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

('स्वस्ति और संकेत' से)

डा. रामनिवास मानव

बंदर की व्यथा

व्याकुल हैं अब सारे बन्दर,
नहीं ठिकाना–ठौर यहाँ।
सिमट रहे हैं सारे जंगल,
फिर हम जायें और कहाँ ?

छीन लिया है जब मानव ने
असली आवास हमारा,
हमको भी तो कहीं चाहिये
रहने को तनिक सहारा।

होकर विवश हम जब भी कभी
शहर–गांव में आते हैं,
लोग सभी पड जाते पीछे,
डंडे मार भगाते हैं।

दुनिया केवल मानव की है,
हमको यह स्वीकार नहीं।
इस धरती पर क्या हमको है
जीने का अधिकार नहीं?

जंगल मानव ने काटे हैं,
उसने सब उत्पात किया।

फिर क्यों दोषी हम ही बोले,
जब मानव ने घात किया।

दोष स्वयं का सिर दूजे के,
यह तो न्याय नहीं है जी!
मार भगाना निर्दोषों को,
सही उपाय नहीं है जी!

गाँव–शहर हो या जंगल हो,
मानव हो या बंदर हो।
चाह सभी की यहाँ यही है,
छोटा–सा अपना घर हो।

जंगल छूटा शहर छोडकर
सोचो, अब हम रहें कहाँ ?
अपने अन्तर्मन की पीडा
बोलो, किसको कहें यहाँ ?

यही हाल रहा ,तो कल यहाँ
शेर–बाघ भी आयेंगे,
और तुम्हारी इस पथरीलि
बस्ती में बस जायेंगे।

तब तुम मारोगे किस–किस को,
सबको कहाँ भगाओगे?

एसी बंदरगी दुनियाँ में
तुम भी क्या रह पाओगे?

जंगल काटे धरती बांटी,
बांटी नदियां, सागर सब।
शेष न जब कुछ बच पायेगा,
बोलो, क्या काटोगे तब?

सब प्राणी हैं इसी धरा के,
खाने– पीने दो सबको।
सुख से जियो और हमेशा,
सुख से जीने दो सबको।

मिलकर मानव–बन्दर सारे
धरती को स्वर्ग बनायें।
सभी बराबर रहें प्यार से,
सुख देकर सब सुख पायें।

छीना–झपटी,मारा–मारी
अब ज्यादा नहीं चलेगी।
मानव की हर गलती आगे
उसको ही कहीं छलेगी।

दिविक रमेश

महात्मा गांधी हिंदी अन्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में टहलते हुए

बहुत ऊँचे टीले से
देखा बहुत नीचे
थी तो पृथ्वी ही
पर लगा
पृथ्वी मुक्त थी आकाश के पंजों से।
गोरख पांडे निकल आए थे अपने नाम की इबारत से ।
खडे थे बिरसा मुंडे
गोरख के कंधों पर रखे हाथ।
मैं उतरने लगा था
और उतरता चला गया
खडे थें प्रेमचन्द लालटेन लिए
जैसे कोई अपना मिला मुझे।
रोशनी में दिखा
कुछ खोज रहे थे कामिल बुल्के कोश में
अच्छा लगा
मौजूद थी नागार्जुन सराय भी पडोस में।
बिना विश्राम किए वहाँ
मैं बढ भी कैसे सकता था
अज्ञेय और शमशेर की दुनिया में?

शायद कहा था शमशेर ने ही
कना नहीं जब तक देख न लो
राहुल जी का पुस्तक– आगार ।
अरे केदार अग्रवाल जी आप भी
और पूरे तामझाम के साथ आप भी
हबीब तनवीर साहब
आप ही की ओर तो जा रहें हैं विजय तेंदुलकर जी।
वाह! लगी है पीठ से पीठ।
क्या कहने
क्या खूब रची आँखन देखी मेरे कबीर ने।
और उधर परसाई से भी मिल लेना
आवाज आई
पलट कर देखा तो खिलखिलाहट थी
विदेशी विद्यार्थियों से घिरे भारतेन्दु जी ।
मुग्ध था मैं देखता विश्वविजयी टैगोर को।
बढ रहा था मैं
और सुन रहा था पदचाप जानी– पहचानी
करने वाले थे प्रवेश मुख्य द्वार से
रामविलास जी।
सामने खडा था आकाश
हाथ बढाए
और मुझे अच्छा लगा था
आकाश से हाथ मिलाना।

अनमिका

(1)

बेजगह

“अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून” -
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थीं
हम लडकियाँ अपनी जगह पर!

जगह? जगह क्या होती है?
यह वैसे जान लिया था हमने
अपनी पहली कक्षा में ही!

याद था हमें एक – एक अक्षर
आरंभिक पाठों का–
राम, पाठशाला जा !
राधा खाना पका !
राम, आ बताशा खा !
राधा, झाडू लगा !
भैया, अब सोएगा

जाकर बिस्तर बिछा !
अहा, नया घर है !
राम, देख यह तेरा कमरा है !
'और मेरा ?'
'ओ पगली'
लडकियाँ हवा, धूप, मि–ी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता ।"

जिनका कोई घर नहीं होता–
उनकी होती है भला कौन – सी जगह ?
कौन सी जगह होती है ऐसी
जो छूट जाने पर औरत हो जाती है।
कटे हुए नाखूनों,
कंघी में फँस कर बाहर आए केशों–सी
एकदम से बुहार दी जाने वाली ?
घर छूटे, दर छूटे, छूट गए लोग–बाग
कुछ प्रश्न पीछे पडे थे, वे भी छूटे!
छूटती गई जगहें
लेकिन, कभी भी तो नेलकटर या कंघियों में
फँसे पडे होने का एहसास नहीं हुआ!

परंपरा से छूट कर बस यह लगता है–

किसी बडे क्लासिक से
पासकोर्स बी.ए.के प्रश्नपत्र पर छिटकी
छोटी–सी पंक्ति हूँ–
चाहती नहीं लेकिन
कोई करने बैठे
मेरी व्याख्या सप्रसंग!

सारे संदर्भों के पार
मुश्किल से उड कर पहुँची हूँ
ऐसी ही समझी–पढी जाऊँ
जैसे तुकाराम का कोई
अधूरा अभंग!

गोरख पाण्डे

बन्द खिडकियों से टकराकर

घर–घर में दीवारें हैं
दीवारों में बंद खिडकियाँ हैं
बन्द खिडकियों से टकराकर
अपना सिर
लहुलुहान गिर पडी है वह
नई बहू है,घर की लक्ष्मी है
इनके सपनों की रानी है
कुल की इज्जत है
आधी दुनिया है
जहाँ अर्चना होती उसकी
वहाँ देवता रमते हैं
वह सीता है सावित्री है
वह जननी है
स्वर्गादपि गरीयसी है
लेकिन बन्द खिडकियों से टकराकर
अपना सिर
लहुलुहान गिर पडी है वह
कानूनन समान है
वह स्वतंत्र भी है

बडे–बडों की नजरों में तो
धन का एक यन्त्र भी है
भूल रहे वे
सबके ऊपर वह मनुष्य है
उसे चाहिए प्यार
चाहिए खुली हवा
लेकिन बन्द खिडकियों से टकराकर
अपना सिर
लहूलुहानगिर पडी है वह
चाह रही है वह जीना
लेकिन घुट–घुटकर मरना भी
क्या जीना?
घर–घर में शमशान घाट हैं
घर–घर में फाँसी–घर हैं
घर–घर में दीवारें हैं
दीवारों से टकराकर
गिरती है वह
गिरती है आधी दुनिया
सारी मनुष्यता गिरती है
हम जो जिन्दा हैं
हम सब अपराधी हैं
हम दण्डित हैं।

कविपरिचय

बिहारीलाल:–श्रृंगार रस के सिद्धहस्त कवि बिहारीलाल हिन्दी साहित्य में अन्यतम स्थान रखतेहैं। उनका जन्म आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार ग्वालियर के पास बसुवा गोविंदपुर में लगभग 1603 में हुआ था। उनके पिता केशवराय थे। उन्होने बिहारी की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया ।सुप्रसिद्ध महा कवि केशवदास से उन्होने काव्य कला सीखी।विवाह के बाद वे अपने ससुराल मथुरा में घर जँवाई बन कर रहने लगे। आरंभ में उनको काफी सम्मान मिला फिर उनकी दुर्गति होने लगी । उन्हीं दिनों अपने शिक्षा गुरु नरहरिदास के यहाँ उनका परिचय राजकुमार खुर्रम से हुआ। वही खुर्रम बाद में शाहजहाँ के नाम से प्रसिद्ध बादशाह हुआ।वह शायरी का शौकीन था। उन दिनों बिहारी भी अच्छी कविता करने लगे थे । इस कारण खुर्रम की मित्रता बिहारी से हो गई और उसके आग्रह पर आगरा में रहने लगे।

सन् 1635 के आसपास वार्षिक वृत्ति लेने के लिए बिहारी जयपुर गए। वहाँ पता चला कि महाराज जयसिंह अपनी नयी कम उम्र की दुल्हन के साथ रागरंग में इतना लीन हो गए थे कि उन्हे दीनोधर्म की खबर तक नहींथी । तब बिहारी ने यह दोहा उन तक पहुँचा दिया–

नहिं पराग नहि मधुर मधु,नहिं विकास इहि काल ।

अलि कलि ही सों बिंध्यों, आगे कौन हवाल।

यह दोहा पढकर महाराज जयसिंह के ज्ञान चक्षु खुल गए। बिहारी को पूर्ण सम्मान देकर जयपुर के आस्थान में बसा लिया। उनकी मृत्यु 1665 में हुई।

रचनाएँ:–बिहारी सतसई, उसमें कुल 713 दोहों का संग्रह है, इन दोहों में भक्ति,रीति–नीति,उपदेश, श्रृंगार तथा प्रेरणा का पूर्ण भाव समाया हुआ है।

2. रसखान:

रसखान का जन्म सन 1548 में हुआ माना जाता है। उनका मूल नाम सैयद इब्राहिम था और वे दिल्ली के आस– पास के रहने वाले थे। कृष्ण– भक्ति ने उन्हें ऐसा मुग्ध कर दिया कि गोस्वामी वि—लनाथ से दीक्षा ली और ब्रजभूमि में ही बस गए। सन 1628 के आस– पास

उनकी मृत्यु हुई।

सुजान रसखान और प्रेमवाटिका उनकी उपलब्ध कृतियाँ हैं। रसखान रचनावली के नाम से उनकी रचनाओं का संग्रह मिलता है। उनके काव्य में कृष्ण के रूप– माधुरी, ब्रजमहिमा, राधा– कृष्ण के प्रेम– लीलाओं का मनोहर वर्णन मिलता है।

1. मैथिली शरण गुप्तः

मैथलीशरण गुप्त का जीवनकाल सन 1886–1964 है । उनका जन्म झांसी के निकट चिरगांव में हुआ था। ये द्विवेदीकाल के सब से लोकप्रिय कवि थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से मुलाकात होने के बाद उनकी सलाह से वे अच्छी कविता लिखने लगे थे। द्विवेदी जी की पत्रिका 'सरस्वती' में कविताएं प्रकाशित भी होने लगीं। यानी तब से उनकी काव्य कला में निखार आया। उनका प्रथमकाव्य 'रंग में भंग' का प्रकाशन 1909 में हुआ। 'भारत–भारती' के प्रकाशन के बाद वे राष्ट्रकवि के रूप में मशहूर हुए। उन्होंने दो महाकाव्यों और उन्नीस खण्ड काव्यों की रचना की है। इनकी प्रायः सभी रचनाएं राष्ट्रीयता से ओत प्रोत हैं। खडी बोली की कविता में सबसे पहले सफल प्रयोग गुप्त जी ने ही किया था। उन के काव्य में खडी बोली का मधुर एवं सरलरूप प्राप्त होता है। गुप्त जी रामभक्त कवि थे। उन के 'साकेत' की कथा राम कथा है। लेकिन उन्होंने परम्परा को नकार ऊर्मिला को नायिका बनाया है। यह उनकी मौलिक उद्भावना है। स्वतन्त्रता संग्राम के दरमियान उनकी कविता ने राष्ट्रीयता के प्रसार प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसीलिए वे राष्ट्रकवि बने। उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएं हैं– जयद्रथवध, पंचवटी, यशोधरा, जयभारत, विष्णुप्रिया आदि।

2. महादेवी वर्मा:–

समय–23 मार्च 1907–11 सितंबर 1987.हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवियित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है।महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक है जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार , रोदन को देखा, आर्थ और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना के भाव भी इस दृष्टि से प्रभावित रहें।उन्होंने मन की पीडा को इतने स्नेह और श्रृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन–जन की पीडा के रूप में स्थापित हुई और उससे केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया । संगीत की जानकारी होने के कारण उनके गीतों का नाद–सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है।उन्होंने अध्यापन कार्य से जीवन की शुरुआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विध्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं । साहित्य के सभी महत्वपूर्ण पुरस्कार से सम्मानित है।

कविता संग्रह:–नीहार,रश्मि,नीरजा,संध्यागीत,दीपशिखा,प्रथम आयाम,अग्निशिखा।

गद्य साहित्य:–अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ(रेखा चित्र),पथ के साथी और मेरा परिवार(संस्मरण),संभाषण(चुने हुए भाषणों का संकलन),श्रृ खला की कडियाँ,विवेचनात्मक गद्य,साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध आदि प्रमुख है।

3.रामधारी सिंह दिनकर:

छायावादोत्तर काल के सशक्त कवि दिनकर का समय 1908 से 1974 तक रहा। इनका जन्म बिहार के जिला मुंगेर में स्थित सिमरिया गाँव में हुआ था।बी.ए. शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त अपनी मेहनत से मुजफ्फरपुर के कालेज में हिन्दी विभाध्यक्ष ,राज्यसभा के सदस्य,भागलपुर विश्वविध्यालय के उपकुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार आदि उच्च पद हासिल करने में वे सक्षम हुए थे।

दिनकर के काव्य की सबसे बडी विशिष्टता यही है कि वह छायावादी अवसाद तथा निराशा से मुक्त होकर देश के परिवेश के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण व प्रतिक्रिया प्रकट करता है।जैसे नगेंद्र ने सूचित किया है कि उनकी कविता अपने देश और युग सत्य के प्रति जागरुक है।उन्होंने प्राचीन मूल्यों का नए जीवन सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में आकलन किया है;साथ ही वर्तमान की समस्याओं को प्राचीन जीवन मूल्यों से जोडने का श्रम भी किया है।

प्रमुख कृतियाँ हैं–कुरुक्षेत्र,रश्मिरथी,उर्वशी आदि । ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित ' उर्वशी' और पुरूरवा के प्राचीन आख्यान को नया अर्थ दिया गया है।

4.डा. रामनिवास 'मानव'

जन्म : 2 जुलाई, सन 1954 को तिगरा, जिला–महेन्द्रगढ(हरि) में।

शिक्षा: एम.ए.(हिंदी), पी.एच.डी.,डी.लिट।

कृतियाँ : 'धारा–पथ', 'राश्मि–रथ', 'सांझी है रोशनी' , बोलो मेरे राम , सहमी–सहमी आग, शेष बहुत कुछ, केवल यही विशेष, कविता में उत्तरांचल, पदे–पदे द्विपदी, (काव्य–संग्रह), हम सब हिन्दुस्तानी, आओ, गाओ बच्चों , मुन्ने राजा आजा, लोसुनो कहानी, मिलकर साथ चलें

(बालकाव्य – संग्रह), घर लौटते कदम, इतिहास गवाह है, हो चुका फैसला, (लघु कथा संग्रह), अन्य संपादित कृतियाँ और शोघ प्रबन्ध कुल पैंतीस कृतियाँ प्रकाशित है।

पुरस्कार:हरियाण साहित्य–अकादमि पुरस्कार,शकुन्तला सिरोटिया बाल–साहित्य पुरस्कार, डाँ.परमेश्वर गोयल लघुकथा पुरस्कार,नागरी बालसाहित्य संस्थान ,डा.आम्बेडकर नेशनल अवार्ड,अणुव्रत साहित्य, उदयभानु 'हंस' कविता, राष्टीय हिंदी – सेवी सहस्राब्दी सम्मान, नागरी संवर्द्धन – सम्मान, राष्ट्रीय सृजन सम्मान आदि। 'विद्यावाचस्पति, साहित्यमहोपाध्याय, साहित्य वाचस्पति, साहित्यशिरोमणि, बालसाहित्य– शिरोमणि , लघुकथा– भूषण, हिन्दी भाषा – भूषण, आदि अनेक मानद उपाधियाँ प्राप्त कर प्रस्तुत हिन्दी साहित्य के सेवा में निरत है।

5. दिविक रमेश

इनका वास्तविक नाम – रमेश शर्मा। जन्म 1946 गाँव किराडी, दिल्ली । 20 वीं शताब्दी के आठवें दशक में अपने पहले ही कविता संग्रह 'रास्ते के बीच' से चर्चित हो जाने वाले आज के सुपरिचित हिंदी कवि हैं । 38 वर्ष की आयु में 'रास्ते के बीच' और 'खुली आँखों में आकाश' जैसी अपनी मौलिक कृतियों पर 'सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड' जैसा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से भी संम्मानित हैं । इनका जीवन संघर्षमय रहा हैं। 11 वीं कक्षा से ही आजीविका के लिए काम करते हुए शिक्षा पूरी की। 17–18 वर्ष में दूरदर्शन के कार्यक्रमों का संचालन किया। 1994 –97 में भारत की ओर से दक्षिण कोरिया में अतिथि आचार्य के रूप में भेजे गए, जहां इन्होंने साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए।

प्रमुख कृतियाँ :

काव्य संग्रह: रास्ते के बीच, खुली आँखो में आकाश, हल्दी चावल और अन्य कविताएँ, छोटा–सा हस्तक्षेप।

काव्य नाटक: खंड–खंड अग्नि

अंग्रेजी में अनूदित कविताएँ : फेदर।

कोरियाई भाषा में अनूदित कविताएँ – से दल अई ग्योल होन

मराठी में अनूदित कविताएँ – अष्टावक्र

आलोचना व शोध – नए कवियों के काव्य – शिल्प सिद्धांत, कविता के बीच से, साक्षात त्रिलोचन । कहानियाँ और लेख– निषेध के बाद ; कविताएँ, हिंदी कहानी का समकालीन परिवेश , कहानियाँ और लेखक, कथा पडाव ।

बाल साहित्य कविताएँ: जोकर मुझे बना दो जी, हंसे जानवर हो हो हो, कबूतरों की रेल, छतरी से गप– शप, अगर खेलता हाथी होली, तस्वीर और मुन्ना, मधुर गीत भाग 3–4, कोरियाई बाल कविताएँ, कोरियाई लोक कथाएँ।

कहानियाँ – धूर्त साधु और किसान, सबसे बडा दानी।

लेखकों से साक्षात आत्मीय संस्मरण– फूल भी और फल भी।

लोक कथाएँ–और पेड गूँगे हो गए,सच्चा दोस्त।

अन्य प्रकाशन–बल्लू का हाथी का–बाल नाटकाखंड–खंड अग्नि का मराठी,गुजराती और अंग्रेजी अनुवाद ।

6. अनामिका

वर्तमान समय की चर्चित कवयित्रियों में से एक अनामिका का जन्म 1963 ई. में बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में हुआ। इन्होने अंग्रेजी साहित्य से पी.एच.डी. प्राप्त की। अपनी पढाई के दौरान ही अपने लेखन की शुरुआत की और चर्चा में बनी रहीं।

अनामिका की कविताएँ एक व्यापक अर्थ में गहरे वात्सल्य एवं हँसमुख दोस्त – दृष्टि की सधी अभिव्यक्तियाँ है। स्त्री के लेंस से बृहत्तर समाज की क्लिष्ट विडम्बनाएँ देखती समझती इन कविताओं में एक महीन सी परिहास वृत्ति भी है, गंभीर किस्म की एक क्रीडाधर्मिता _ सत्य को समग्रता में समझने की इमानदार कोशिश भी। लोकरंग में रची– बसी स्त्री कवि की शब्द और बिम्ब सम्पदा के स्रोत अनंत हैं। यहां लोकजीवन का कोई अनूठा प्रसंग विश्व साहित्य के किसी मार्मिक प्रसंग की अंगुली पकडकर उसी तरंग में उठता है, जिसमें लेखक की तीन बहनें उठ्ती थी। मुहावरें कहावातें, पढा– सुना भोगा हुआ सब कुछ एक अलग कौंध

में उजागर करती उन कविताओं में स्त्री भाषा अपने पूरे दशक के साथ अपनी अलग सी उपस्थिति दर्ज कराती है।

रचनाएँ :– गलत पते की चिी, बीजाक्षर, अनुष्टुप, कहती हैं औरतें, कविता में औरत, दस द्वारे का पींजरा एवं खुरदुरी हथेलियां अनामिका की प्रमुख काव्य कृतियाँ है।

पुरस्कार :– भारत भूषण अगरवाल पुरस्कार, साहित्यकार सम्मान, गिरिजाकुमार माथुर सम्मान, परम्परा सम्मान और साहित्य सेतु सम्मान से समानित किया गया है।

7. गोरख पाण्डे :–

समय 1945–26 जनवरी 1989ग्राम– पण्डित के मुंडेरवा जिला देवरिया, उत्तरप्रदेश में हुआ। वे क्रान्तिकारी कवि रहे। मार्क्सवाद मे उनकी अगाध आस्था थी । उनका जीवन दुःख से पूरित था ।प्रमुख कविता संग्रह:– भोजपुरी के नौगीत,जागते रहो सोनेवालों इस कविता संग्रह को ओम प्रकाशस्मृति पुरस्कार मिला, स्वर्ग से विदाई अन्य गजल और गीत है।

काव्य गुलशन –पारिभाषिक शब्दावली

1. Key	-	कुंजी, चाबी
2. Land Mortagage	-	भूमि बंधक
3. Lapse	-	चूक, दोष/बीत जाना
4. Lease deed	-	प–ा विलेख
5. Ledger	-	बही खाता
6. Letter of Credit	-	साख पत्र
7. Limit	-	लिमिट/ परिसीमा
8. Loan	-	ऋण/,उधार
9. Management	-	प्रबन्ध
10. Mandatory	-	अनिवार्य/अधिदेशी
11. Memorandum	-	ज्ञापन
12. Minutes	-	कार्यवृत्त
13. Mortagage	-	बन्धक
14. Negotiate	-	परक्राम्य
15. On Demand	-	माँगने पर
16.On probation	-	परिवीक्षाधीन
17. Option	-	विकल्प
18. Overdraft	-	अधिविकर्ष/ओवर ड्राफ़्ट
19. Payee	-	आदाता
20. Net Profit	-	शुद्ध लाभ
21. Pro-Rata	-	यथानुपात

22.Ready reference	-	तुरन्त संदर्भ
23.Recession	-	मंदी
24.Revenue	-	राजस्व/आगम
25. Return	-	प्रतिलाभ/ प्रतिफल
26. Rectification	-	परिशोधना/सुधार
27. Safe Custody	-	सुरक्षित/अभिरक्षा
28. Sanction	-	मंजूरी/स्वीकृति
29. Seizure	-	कब्जा/अभिग्रहण
30. Subsidy	-	आर्थिक सहायता
31.Teller	-	टेलर/गणक
32. Taking over charge	-	कार्यभार ग्रहण करना
33. Tenure	-	कार्यकाल
34.Term	-	अवधि
35. Treasury	-	खजाना/राजकोश
36.Tax	-	कर
37.Trainee	-	प्रशिक्षणार्थी
38.Trust	-	न्यास/ ट्रस्ट
39.Unauthorized	-	अनधिकृत
40.Unavoidable	-	अपरिहार्य
41.Undertaking	-	वचन देना/उपक्रम
42.Unlimited	-	असीमित
43.Verification	-	सत्यापन
44.Vigilance		-सतर्कता
45.Warning	-	चेतावनी

46.Welfare fund	-	कल्याण निधि
47.Will	-	संकल्प/वसीयत
48.Year financial	-	वित्तीय वर्ष
49.Whole sale	-	थोक
50.Zonal Office	-	आंचलिक कार्यालय